Impact Factor 3.025

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

UGC Approved Monthly Journal

VOL-IV ISSUE-X Oct. 2017

Address
· Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
· Tq. Latur, Dis. Latur 413512 (MS.)
· (+91) 9922455749, (+91) 8999250451

Email
· aiirjpramod@gmail.com
· aayushijournal@gmail.com

Website
· www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

हिन्दी की वर्तमान स्थिति

ज्योति

भाषा सम्प्रेषण का सशक्त साधन है। जीवंतता, यादच्छिकता तथा लचीलापन के भाषा के प्रमुख लक्षण है। भाषा वह चीज है जिसके माध्यम से हम बातचीत कर सकते है तर्क प्रस्तुत कर सकते है किसी का स्वागत कर सकते है तथा अपने भावों को व्यक्त कर सकते है। महात्मा गांधी ने 1917 में गुजरात शिक्षा सम्मेलन के अध्यक्षीय आसन से कहा था, ''किसी भी देश की राष्ट्रभाषा वही भाषा हो सकती है, जो वहा की अधिकाश जनता बोलती है। वह संस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में माध्यम भाषा बनाने की शक्ति रखती हो वह सरकारी कर्मचारियो व सरकारी कामकाज के लिए सुगम व सरल हो, जिसे सुगमता व सहजता से सीखा जा सके। बहुभाषी भारत में हिन्दी एक ऐसी भाषा है, जिसमें सभी गुण पाए जाते है।''

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज के प्रत्येक क्षेत्र में दिन प्रतिदिन प्रगति हो रही है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी के निरंतर विकास से 20वी शताब्दी में ओद्यौगिक क्रांति आई, 21वीं शताब्दी में सूचना क्रांति। 20वीं शताब्दी से पहले भारत ज्ञान में विश्व गुरू रहा, समृद्ध या सोने की चिड़िया कहलाया। भाषा और विज्ञान का तिरोभाव शक्ति से उत्साहित हो पश्चिमी विज्ञान का प्रयोगात्मक विकास तेजी से हुआ, विज्ञान साहित्य का प्रणयन भी प्रौद्योगिकी के आधार पर व्यापार बने ''जैसी रानी वैसी वानी'' अंग्रेजी स्वीकार की गई। तदन्तर प्रतिक्रिया का भाव जगा, अंग्रेजी को जगाया गया, हम स्वतंत्र हुए अपनी भाषा व संस्कृति के प्रति सचेष्ट व कटि बद्ध। स्वतंत्रता के बाद सर्वाधिक बोली जाने वाली हिन्दी भाषा को समृद्ध और प्रयोज्य बनाने के लिए भारत सरकार ने अनेक योजनाए बनायी संस्थान खोले। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग लिए भारत सरकार ने राजभाषा विभाग खोला।

12 वीं से 18वीं सदी के 800 वर्षो में भारत में विज्ञान एंव प्रौद्योगिकी पर10 हजार से अधिक किताबे लिखी गई। भारत की पाण्डुलिपियों का अनुवाद अरबी और फारसी से हुआ, ज्ञान भारत से बाहर गया। इसी प्रकार भारत में बाहर से वैज्ञानिक विचारों, पद्धतियों को आत्मसात किया। इसमें प्रस्फूटित होने के लिए उपयुक्त वातावरण और प्रोत्साहन की आवश्यकता है जैसे हम भविष्य में बढ़े और हमें आत्मनिर्भर होना चाहिए और आत्मनिर्भर होकर नेतृत्व प्रस्तुत करना चाहिए। ऋग्वेद की ऋचा का अभ्यांतर उल्लेखनीय है–

हम है दिव्य शक्ति के स्वामी
बने अगृनी नहीं अनुगामी
अपने ही अनुभव के बल पर
गए सृजन आधार बनाए।''

हिन्दी का वर्तमान परिप्रेक्ष्य– भारत में भाषायी विविधता है, लेकिन सांस्कृतिक एकता है, वैचारिक समता है। हिन्दी भारत में भली भांति समझे जाने वाले लोगो की भाषा है। स्वतंत्रता के बाद पिछले साठ वर्षो में हिन्दी साहित्य का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है। अपभ्रशं को अभिव्यक्ति मिली लेकिन नौ दिन चले ढाई कोस की भांति हिन्दी व्यवहार की स्थिति है। एक मित्र ने असहमति बताते हुए कहा कि गाड़ी तो चली लेकिन रिवर्स गियर में उपादियता इस बात से प्रभावित है कि यह हमारे बहुसंख्यक लोगो की भाषा है, साहित्यकारो और कवियों की भाषा है, लोकप्रिय फिल्मों की भाषा है इसमें विज्ञान और व्यापार की अद्यतन जानकारी भी है। यह वोट मांगने की इकलौती सशक्त भाषा है।

हिन्दी अपनी भाषा है। गुलामी के बाद पश्चिम के समृद्ध समाज से कदम से कदम मिलाने की चाह में अग्रेंजी को अपनाया। आज आधुनिक समय में दिखावे और आत्मगौरव में द्वन्द्व हैं। सब पेशोपेश में है। विचार पेश करते है और मन्थन करते है। आधुनिक समय में अंग्रेजो के चले जाने के बाद छः दशको से अधिक समय के बाद भी सांस्कृतिक उपरिवेशवाद के रूप में न सिर्फ कायम है, बल्कि फल फूल रही है। भाषा को लेकर इस गुलामी ने हमें प्रभावित किया बल्कि पड़ोसी देशो को भी गिरफत में लिया है। राष्ट्रीय अस्मिता के तौर पर अपने उचित स्थान और सम्मान की दावेदार राष्ट्रभाषा हिन्दी को अपने हाल पर छोड़ दिया गया। हिन्दी बेरोजगार की भाषा बनकर रह

गई है और अग्रेंजो को रोजगार की तलाश के लिए मानव संसाधन के निर्यात हेतु एक सक्षम औजार के रूप में विकसित होने के लिए पूंजी बाजार की निगरानी में डाल दिया गया। अंग्रेजी उपनिवेशवाद के जमाने में जो मजदूर, मारिशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम, फिजी आदि देशो में प्रवासी भारतीयों के रूप रोजी–रोटी कमाने गए थे वे साथ ही उनकी भाषाएं भी लेकर गए थे। जो कि हिन्दी या भोजपूरी थी यहां सौहार्द पूर्ण भाषा थी। उन भाषा को वे आज भी जिन्दा रखे हुए है परन्तु हिन्दी भाषा के साथ आज का षडयंत्र यह है कि हमारे लोग अब गिरमिटिया बन कर रह तो अंग्रेजी सीखकर आधुनिक स्थिति में हिन्दी ने हिगलिश का रूप धारण कर लिया है। आज प्रत्येक क्षेत्र हिन्दी के साथ अंग्रेजी का वर्चस्व अधिक है चाहे वो कोई न्यूज चैनल हो, पत्रिकाए हो (हिन्दी के रूप को बिगाड़ कर रख दिया है। वर्तमान समय में हिन्दी की दशा को सुधारने के लिए हमें इसके क्षेत्र को व्यापक बनाना होगा और प्रत्येक को हिन्दी अपनाने के लिए प्रेरित करना होगा। हिन्दी में वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर विचार डालते हुए रवीन्द्र नाथ टैगोर का मत उचित प्रतीत होता है। ''आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल के समान है, जिसका एक एक दल, एक एक प्रांतीय भाषा और उसकी साहित्य संस्कृति है। भारत की समस्त प्रांतीय बोलियां, जिसमे सुन्दर साहित्य की सृष्टि हुई है। अपने–अपने घर में रानी बनकर रहे और आधुनिक भाषाओं के हार के मध्यमणि हिन्दी भारत भारती होकर विराजती रहे।

हिन्दी का वर्तमान परिप्रेक्ष्य को सुधारने के लिए सभी जनवासियों को हिन्छी की महत्ता पर विचार करते हुए उसे जन जन की भाषा का रूप देने के लिए हिन्दी का दायरा बढ़ाना होगा ताकि सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत देश भाषा की दृष्टि से समृद्ध संपन्न व खुशहाल बन सके। स्वदेशो के साथ–2 विदेशो में भी हिन्दी भाषा का वर्चस्व बढ़ता जाए।

संदर्भ सूची

1 हिन्दी की दशा और दिशा –डा. सुधेश
2 हिन्दी की वर्तमान स्थिति –डा. ओम विकास

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com